3

भारतीय शिक्षा पद्धति पर पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का प्रभाव

अमरीन अली*

भारत देश आरंभ से ही विदेशी शासकों एवं व्यापारियों के लिए व्यापार, वैभव व संपदा के नज़रिए से आकर्षण का केंद्र रहा है और इसी कारणवश आरंभ से ही भारत पर लगातार आक्रमण होते रहे हैं। आर्यों के भारत आगमन के पश्चात् इस्लाम, ईसाई, पुर्तगाली आदि ने व्यापार के अतिरिक्त भारत पर राजनीतिक और सांस्कृतिक दोनों रूपों से अपना कब्ज़ा जमाया। अपने धर्म प्रचार हेतु सभी प्रकार के उपायों को अंजाम दिया। प्रत्येक शासक अपने साथ अपने देश की संस्कृति, भाषा एवं शिक्षा सिद्धांतों को भारत लाता गया और अपने राज-काज व उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु इन्हें समाज में लागू करता गया। भारत की बहुमूल्य संपदाओं एवं व्यापार की अपार संभावनाओं से आकर्षित होकर, 17वीं शताब्दी से भारत में यूरोपीय व्यापारियों का आना आरंभ हुआ। इन यूरोपीय व्यापारियों के आने से पूर्व भारत में देशी शिक्षा प्रचलित थी। किंतु इस देशी शिक्षा में कई प्रकार के दोष भी थे, जिनमें से सबसे बड़ा दोष था आर्थिक विपन्नता। अनेक आक्रमणों से देश की अर्थव्यवस्था चरमरा गई थी। और इसी कारणवश शिक्षा की भी अवनति हो गई। इन यूरोपीय व्यापारियों के साथ-साथ यहाँ के अंग्रेज़, डेन, डच, पुर्तगाली व फ्रांसीसी मिशनरियों का मुख्य उद्देश्य यहाँ के निवासियों को ईसाई धर्म में दीक्षित करना था। उनके इस उद्देश्य की चाहे कितनी भी बुराई की जाए, पर इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा को साधन बनाकर, उन्होंने इस देश में जो कार्य किए, वे भारतीय शिक्षा के इतिहास में सदैव स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेंगे। उन्होंने इस देश में न केवल आधुनिक शिक्षा पद्धति को प्रचलित किया वरन् स्वयं शिक्षा संस्थाओं का संचालन करके भारतीयों के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत भी किया।

19वीं शताब्दी में मिशनरियों ने शिक्षा को नया रूप दिया। भारतीय शिक्षा पद्धति और मुस्लिम शिक्षा पद्धति को मिशनरियों ने पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से अवगत कराया। इस शिक्षा पद्धति का भारतीय जनता को खासा फ़ायदा भी हुआ। इस प्रकार मिशनरियों ने अपनी आधुनिक शिक्षा पद्धति के माध्यम से एक नवीन प्रणाली का सूत्रपात कर इस देश की जनता का अकथनीय हित किया।

* *शोधार्थी*, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली

सन् 1600 में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के पश्चात् अंग्रेज़ मिशनरियों ने धर्म प्रचार के लिए बहुत से प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना तथा खैराती स्कूलों, मिशन स्कूलों आदि की व्यवस्था की। इसके पश्चात् जोनाथन डंकन ने अठ्ठारहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में बनारस संस्कृत कॉलेज की स्थापना कर धार्मिक तटस्थता की नीति को लागू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी मिशनरियों ने इस पहल के विरोध में चार्ल्स ग्रांट की अध्यक्षता में आंदोलन आरंभ किया। चार्ल्स ग्रांट ने अंग्रेज़ी भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाए जाने पर ज़ोर दिया। इस आंदोलन के फलस्वरूप 1813 ई. में कंपनी ने एक आज्ञा पत्र जारी कर मिशनरियों को भारत में धर्म प्रचार तथा अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रचार की अनुमति दे दी। इसके पश्चात् भारी मात्रा में मिशनरियों का भारत में आना आरंभ हुआ। इन मिशनरियों ने भारत में अंग्रेज़ी माध्यम और पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का सूत्रपात किया। आरंभिक स्तर पर मिशनरियों ने मुंबई, बंगाल व मद्रास में कई प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की तथा इनके सार्थक प्रयास को देखते हुए तत्कालीन प्रशासन ने आज्ञा पत्र पारित कर इन्हें पूरे भारत वर्ष में धार्मिक कार्य करने तथा अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा प्रसारित करने की स्वतंत्रता दे दी।

19वीं शताब्दी में वुड तथा शिक्षा आयोग ने शिक्षा को बढ़ावा देने और उसे पुनर्जीवित करने हेतु प्रत्येक प्रदेश में शिक्षा संचालन के लिए शिक्षा विभाग की स्थापना की। आज हम जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था पाकर आधुनिक होने का गौरव पाते हैं, यह मूलतः इन्हीं मिशनरियों की देन है। जी. क्लार्क तथा जे. थामसन द्वारा चलाई गई विवेकपूर्ण शैक्षिक नीति जिसमें प्रारंभ से ही बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देना, मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देना एवं शिक्षा के अनुभव करते हुए उसको अधिक व्यावहारिक बनाना था जिससे वह उनके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकें। अंग्रेज़ी माध्यम व शिक्षा की यह आधुनिक नीति तत्कालीन शिक्षा पद्धति के लिए वरदान की तरह साबित हुई। मिशनरियों ने भारतीयों का पाश्चात्य ज्ञान से संपर्क स्थापित किया और यह उस समय हुआ जब भारतीय संस्कृति पतन की ओर जा रही थी, इस ज्ञान से इन्हें प्रगति पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

अंग्रेज़ी शिक्षा पाकर भारतीयों को केवल शैक्षिक ज्ञान ही प्राप्त नहीं हुआ, इसके साथ भारतीय समाज में भी कई सारे सामाजिक बदलाव आए। ऊँच-नीच, जाति प्रथा, सती प्रथा, और शिशु हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों के प्रति भारतीय समाज जागरूक हुआ। पाश्चात्य ज्ञान एवं विज्ञान पाकर भारतीयों ने विज्ञान के क्षेत्र में भी अपना विशेष स्थान प्राप्त किया, इनमें श्री रामानुजन, जगदीशचन्द्र बसु, सी. वी. रमन आदि उल्लेखनीय हैं। पाश्चात्य संस्कृति एवं ज्ञान के संपर्क में आकर भारतीयों में मानवतावादी प्रवृत्तियों का विकास हुआ। अस्पृश्यता उन्मूलन, महिला उद्धार जैसे कार्य अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा प्रणाली के जरिए ही किए गए।

भारतीय विद्वानों में इस मत को लेकर बहुत समय से विवाद रहा है कि अंग्रेज़ी शिक्षा भारतीय समाज के लिए हितकर है या अहितकर। अंग्रेज़ी शिक्षा को अहितकर मानने वाले आलोचकों एवं विद्वानों ने इसके कई दोष प्रस्तुत किए हैं जैसे कि अंग्रेज़ी शिक्षा

का सबसे बड़ा दोष यह है कि वह भारतीय वातावरण के प्रतिकूल थी उसकी संरचना इंग्लैंड की शिक्षा प्रणाली को आदर्श मानकर ही की गई थी। अंग्रेज़ों ने भारतीय संस्कृति को हेय दृष्टि से देखा और अपनी संस्कृति को उच्च मान कर भारतीय समाज पर थोपने का प्रयास किया। उन्होंने भारतीय धर्म और संस्कृति को नष्ट कर उसके स्थान पर ईसाई मत को प्रतिष्ठित करने का भरपूर प्रयास किया। इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ी शिक्षा पद्धति कभी भी संतोषजनक नहीं रही। समय-समय पर इसमें आवश्यकताओं के अनुसार बदलाव होते रहे। अधिकांश अंग्रेज़ी अफ़सर अपने कार्यकाल के लिए योजनाएँ बनाते और इन्हीं शिक्षा संचालकों के साथ-साथ शिक्षा नीति में परिवर्तन होता रहता था।

अंग्रेज़ों द्वारा स्थापित की गई शिक्षा व्यवस्था से राष्ट्रीय एकता खंडित हुई और देशी शिक्षा परावलंबी हो गई। भारतीय पारंपरिक शिक्षा पद्धति सरल, सुलभ, बोधगम्य, सस्ती और जनसाधारण की आकांक्षाओं के अनुरूप थी, किंतु तत्कालीन प्रशासन ने भारतीय शिक्षा पद्धति की इन विशेषताओं को नज़रअंदाज़ किया। अंग्रेज़ी शिक्षा अधिकारियों का दृष्टिकोण भारतीय भाषाओं के प्रति उदासीन रहा और इसी कारण शिक्षा अधिकारी ने शिक्षा की अनेक गलत नीतियों का अनुसरण कर राष्ट्रीय शिक्षा के विकास का मार्ग अवरुद्ध करते रहे।

इन दोषों के बावजूद कुछ भारतीय विद्वान थे जो पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के पक्षपाती रहे। उनका मानना था कि यदि भारत को वैश्विक स्तर पर अपना स्थान बनाने एवं अंग्रेज़ों की नीतियों को जानने हेतु पाश्चात्य शिक्षा को अपनाना होगा। इन आलोचकों में राजा राममोहन राय का विशेष स्थान है। उन्होंने पाश्चात्य शिक्षा और विज्ञान का अधिकाधिक समर्थन किया और इस बात पर बल दिया कि प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने के लिए भारत को मध्यकालीन विद्वतावादी पद्धति का परित्याग करके अपनी शिक्षा पद्धति आधुनिक विज्ञान के अनुकूल बनानी चाहिए। अपनी इन्हीं मान्यताओं और शिक्षा के द्वारा राजा राममोहन राय ने भारतीय जनता का यूरोपीय विचारों और मानदंडों से परिचय कराया। अपने इसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने 1816–17 में कलकत्ता में एक अंग्रेज़ी स्कूल की स्थापना की और इसके पश्चात् सन् 1822–23 में हिंदू कॉलेज की स्थापना हुई।

सामाजिक विकार के रूप में लोगों में ईसाइयों द्वारा शिक्षा ग्रहण करने को लेकर एक प्रकार का धार्मिक डर बस गया था। उनका मानना था कि ईसाइयों द्वारा शिक्षा प्राप्त करने से वे भी ईसाई हो जाएँगे। राजा राममोहन राय ने लोगों के मन से इस डर को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने लोगों को समझाया कि 'किसी भी धर्म ग्रंथ को पढ़ने से जाति-भ्रष्ट होने का प्रश्न नहीं उठता। सभी धर्मों के विषय में जानना अच्छा है। मैंने खुद कई बार 'बाइबिल' और 'कुरान शरीफ़' पढ़ी है, परंतु न तो मैं ईसाई बना हूँ न मुसलमान। बहुत से यूरोपीय गीता एवं रामायण आदि ग्रंथों का अध्ययन करते हैं, लेकिन वे लोग हिंदू नहीं हो गए।'

अतः यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि हमारी आज की आधुनिक प्राथमिक शिक्षा में ब्रिटेन

के सांस्कृतिक एवं चारित्रिक गुण, अमेरिका के लोकतांत्रिक गुण एवं रूस के श्रम के प्रति आदर उत्पन्न करने के उद्देश्य सहित भारतीय शिक्षा पद्धति और सांस्कृतिक मूल्यों की धरोहर के रूप में मौजूद शिक्षा शास्त्र आदि के गुणों का विकास समाहित है।

आज पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के अनुसार भारतीय शिक्षा पद्धति में भी कुछ ऐसे अहम कदम उठाए जाने चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को ज्ञान के अतिरिक्त रोज़गार के भी अवसर प्राप्त हो सकें। ब्रिटेन, रूस तथा अमेरिका जैसे देशों में विद्यार्थियों के लिए किसी न किसी प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है। इन देशों का अनुकरण करके भारत में भी ऐसी शिक्षा व्यवस्था की जानी चाहिए, ताकि माध्यमिक शिक्षा अपने में पूर्ण हो जाए और इसे पाकर व्यक्ति आत्मनिर्भरता का अनुभव कर सके।

शिक्षा पर ही शासन की पूर्णता एवं जनता की भलाई अवलंबित होती है। आधुनिक शिक्षा द्वारा ही भारत की विभिन्न जातियाँ एवं धर्म संगठित होकर एकता के सूत्र में बँधे। भारत में पुनर्जागरण का एक मात्र कारण शिक्षा का विकास ही है, इसी कारण स्वतंत्रता प्राप्त करने हेतु राष्ट्रीय भावना लोगों में जागृत हुई। यह तथ्य आधुनिक भारतीय शिक्षा में विकास का ऐतिहासिक महत्त्व प्रदान करता है।

ब्रिटिश शासन ने जो शिक्षा की नींव डाली, वह भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुरूप नहीं थी, किंतु फिर भी आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में उसके योगदान को भुला नहीं सकते और उनकी इसी विशेषता के कारण राजा राममोहन राय जैसे महान समाज सुधारकों ने भी इसका समर्थन किया। आज प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की जो पद्धति अपनाई जाती है वह पूर्णतः पाश्चात्य से प्रेरित है। शिक्षा क्षेत्र में बच्चों को दंडित करने के बजाए खेल खेल में सिखाना, बच्चों को अंकों के स्थान पर ज्ञानार्जन पर बल देना, उनके मनोवैज्ञानिक स्तर को समझना, उन्हें इस बात का एहसास दिलाना कि समाज में उनका भी एक विशेष स्थान है, आदि पाश्चात्य शिक्षा पद्धति की देन हैं।

उन्नति एवं सार्थक विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है अतः कोई भी देश तभी उन्नति एवं विकास की ऊँचाइयों को छू सकता है जब वह शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्नत हो और इसके लिए आवश्यक है नींव अर्थात् प्राथमिक स्तर पर शिक्षा को मज़बूत करना।

संदर्भ

अदावल, एस. वी. एवं एम. उनियाल. 1973. *भारतीय शिक्षा समस्याएँ तथा प्रवृत्तियाँ*. लखनऊ, उत्तर प्रदेश ग्रंथ अकादेमी.

चौबे, सरयू प्रसाद. 1973. *पाश्चात्य शैक्षिक विचारधारा*. सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद.

रावत, प्यारेलाल. 1970. *भारतीय शिक्षा का इतिहास*. राम प्रसाद एंड संस, आगरा.